International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 12, Issue 4,April 2025
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव

डॉ० सुलेखा रानी

ग्राम+पोस्ट- लदौरा

थाना+प्रखंड- कल्याणपुर, जिला-समस्तीपुर, बिहार

सार-संक्षेप

सोशल मीडिया आज हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। इंटरनेट के माध्यम से व्यक्तिगत, सार्वजनिक, या समूह स्तर पर संचार के लिए उपयोग करना ही सोशल मीडिया कहलाता है। इसका प्रभाव समाज में गहरे स्तर पर देखा जा सकता है। सोशल मीडिया ने दुनिया को एक "ग्लोबल विलेज" में बदल दिया है। लोग किसी भी स्थान से एक दूसरे से संवाद कर सकते हैं। अब समय और स्थान की सीमा नहीं रही। मिनटों में हजारों मील तक तुरंत लोग अपनी बातों-विचारों को पहुँचाते हैं। जाहिर है कि सोशल मीडिया ने लोगों तक त्वरित जानकारी पहुंचाने का काम किया है। चाहे वह राजनीतिक घटनाक्रम हो, शैक्षिक अवसर, स्वास्थ्य की या रोजगार की जानकारी, या किसी सामाजिक समस्या पर ध्यान आकर्षित करना हो, सोशल मीडिया ने हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। सोशल मीडिया के माध्यम से कई शैक्षिक सामग्री और अहनलाइन कोर्स उपलब्ध होते हैं। छात्रों और शिक्षकों के लिए यह एक बेहतरीन मंच है जहां वे एक-दूसरे से संवाद कर सकते हैं और नए ज्ञान को साझा कर सकते हैं। जहाँ सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ रहा है वहीं इसका नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलता है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। खासकर किशोर एवं युवा वर्ग पर, जो सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताते हैं, वे आत्म-संकोच, आत्म-संवेदना में कमी और अवसाद का शिकार हो सकते हैं। सोशल मीडिया पर आदर्श जीवन के चित्रों और लाइफ स्टाइल्स को देखकर लोग अपने वास्तविक जीवन से तुलना करते हैं, जिससे वे मानसिक दबाव महसूस करते हैं। सोशल मीडिया पर गलत या फर्जी जानकारी का प्रसार भी तेजी से होता है। जो समाज में भ्रम और तनाव पैदा करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से साइबर बुलिंग और अहनलाइन उत्पीड़न की घटनाएं भी बढ़ी है। खासकर बच्चों और किशोरों के लिए यह एक बड़ी समस्या बन चुकी है। उनके व्यक्तिगत जीवन, तस्वीरों या वीडियो को लेकर उन्हें मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग भी एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है।

शब्द कुंजी : सोशल मीडिया, संचार साधन, सामाजिक विकास आदि।

प्रस्तावना

आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है जिसके सहारे सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षा से संबंधित विभिन्न आयामों की जानकारी उपलब्ध करना आसान हो गया है। सोशल मीडिया एक विशाल

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। इसके माध्यम से द्रुत गति से सूचनाओं के आदान-प्रदान करना आसान हो गया है। वर्तमान में सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसकी पहुँच का दायरा विश्वव्यापी है। आज न्यूज सोशल मीडिया पर ब्रेक होकर समाचार चैनलों एव पत्र-पत्रिकाओं की सुर्खियां बन रही है। सेल्फी अपलोड करने की होड़ आम से लेकर खास सभी में लगी हुई है। कहरपोरेट जगत से लेकर सार्वजनिक संस्थान अपने प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया मार्केटिंग ने बाजार को एक क्लिक तक सीमित कर दिया है। जहाँ एक तरफ सोशल मीडिया की पहुँच एवं प्रायोगिक क्षमताएँ लोगों की जीवनशैली को आसान बना रही हैं वहीं बढ़ता साइबर क्राइम लोगों के लिए तमाम मुसीबतें भी पैदा कर रहा है।[१]

सोशल मीडिया अहनलाइन मीडिया का अभिन्न अंग है। सोशल मीडिया २.० वेब तकनीक पर आधारित अहनलाइन वेबसाइट के जरिए लोगों को जुड़ने का मंच प्रदान करती है। सोशल मीडिया टेक्स्ट, अहडियो और वीडियो तीनों ही प्रकार की सामग्री को प्रेषित करती है। इन साइट्स से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया साइट्स पर एकाउंट बनाना पड़ता है। एकाउंट क्रिएट करने के लिए किसी भी ई-मेल सर्विस देने वाली वेबसाइट जैसे जीमेल, याहू आदि का ई-मेल एकाउंट होना चाहिए, जिसे सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर रजिस्टर कर सोशल मीडिया एकाउंट बना सकते हैं। आज विश्व की हजारों किलोमीटर में फैली आबादी एक क्लिक से एक-दूसरे के आमने-सामने आ जाती है और व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों ही प्रकार से अपने विचारों को व्यक्त कर पाती है। सूचना प्रौद्योगिकी ने सभी सीमाएँ लांघ कर अपने को विश्व पटल पर सर्वोत्तम् स्थान प्रदान कर दिया है। वर्तमान में समाज के छोटे से छोटे मुद्दों को विश्व स्तर का मंच प्राप्त है। सोशल मीडिया ने लोगों की दिनचर्या में अपना स्थान बना लिया है, लोग इसे जीवन का अहम हिस्सा मानने लगे हैं। यह उन्हें लोगों से जोड़ कर विश्व स्तर पर पहचान देती है। यह माध्यम आज के युग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बनता जा रहा है। लोग सोशल मीडिया से जुड़ने के लिए ही इंटरनेट की दुनिया में प्रवेश करते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि लोगों का जीवन सोशल मीडिया के बिना अधूरा है। सोशल नेटवर्किंग प्रदान करने में फेसबुक, गुगल, ट्वीटर, लिंक्ड-इन, अहरकुट तथा यू-ट्यब आदि नेटवर्किंग साइट्स मौजूद हैं।

मानव समाज की हमेशा से ही अपनी बात को एक-दूसरे तक पहुँचाने की लालसा रही है। साथ ही समाज में सूचना के प्रवाह में माध्यमों की महती भूमिका रही है। वर्तमान में सोशल मीडिया व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार की सूचना संप्रेषण का लोकप्रिय माध्यम माना जाता है। सोशल मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता एवं पहुँच समाज में शिक्षा, सूचना, स्वास्थ्य एवं जागरूकता के प्रसार में अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है। डिजिटल इंडिया, ई-क्रांति जैसी योजनाएँ ग्रामीण अंचलों में इंटरनेट की सुविधा मुहैया कराने के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही हैं, साथ ही साथ सोशल मीडिया के जरिए गवर्नेंस की पहल लोगों को एक ही स्थान पर शहपिंग, बैंकिंग, टिकटिंग, लर्निंग एवं सूचना हस्तांतरण की सुविधा मुहैया करा रही है। सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया है। इसके बिना अब कोई नहीं रह सकता।[२]

आज अधिकांश घर के बच्चे एवं युवा वर्ग घंटों अपना समय सोशल मीडिया पर बिताते हैं। कुछ तो इस सदुपयोग करते हैं परन्तु कुछ इसका दुरूपयोग भी करते हैं। इस पर सिनेमा एवं अश्लील चित्र आदि देखकर अपना समय नष्ट करते हैं। लड़कियाँ एवं महिलाएँ भी इसके गिरफ्त में आ रही हैं। पारिवारिक संरचना, नातेदार सब सोशल मीडिया पर सिमटते जा रहे हैं। सोशल मीडिया ने रोजगार में अभिवृद्धि की है। साइबर कैफे कम्प्यूटर सेंटर एवं मोबाइल दूकान खोलकर लोग रोजगार तो प्राप्त कर ही रहे हैं साथ ही घर बैठे भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपना व्यवसाय चला रहे हैं।

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। जाने-माने जनसंचारशास्त्री विद्यावाचस्पति ने कहा है कि पत्रकारिता पांचवा वेद है। अर्थात समाज के समावेशी विकास में जनमाध्यमों की सक्रियता महती भूमिका रखती है। समाज के विकास में सूचना प्रसार मुख्य जरूरत है। लोकत्रांत्रिक समाज की मुख्य कड़ी जनमाध्यम हैं। लोकतंत्र में जनता के हितों की परिचायक मीडिया होती है। साथ ही साथ सरकार की बात को जनमानस तक एवं जनमानस की बात सरकार तक पहुँचाने का कार्य मीडिया करती है। सोशल मीडिया को जनचेतना मंच के नाम से संबोधित किया जाता है। सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जहां जनता स्वयं अपने विचार बिना किसी रोक-टोक के विश्व के किसी भी कोने में व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से प्रेषित कर सकती हैं। सोशल मीडिया की वैश्विक ग्राम की अवधारणा ने इसे वर्तमान में सबसे लोकप्रिय माध्यम बना दिया है। भ्रष्टाचार के विरोध में अन्ना हजारे का शंखनाद हो या चीन जैसे देश में अभिव्यक्ति की आवाज को आयाम देना रहा हो सभी इसके उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक हैं। अरब में सोशल मीडिया के जरिए जैसमीन रेवोल्यूशन जैसे उदाहरण हों या भारतीय रेल में ट्वीटर के जरिए मदद की गुहार हो, सभी समाज को एकजुट करने में सोशल मीडिया की भूमिका को प्रदर्शित करते हैं। आज बहुत से विश्वविद्यालय सोशल नेटवर्किंग के जरिए फ्री अहनलाइन रिसोर्सेज विकसित कर रहे हैं। साथ ही विभिन्न वेबसाइट्स अहनलाइन ट्यूटोरियल चला रही हैं जिससे जुड़कर लोग सीख पा रहे हैं। सोशल मीडिया अहनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफहर्म मुहैया करा रहा है जिसके जरिए लोग अपने व्यवसाय को विश्व स्तर पर पहचान दिला पा रहे हैं। कहर्पोरेट कम्युनिकेशन में सोशल मीडिया ने बड़े बदलाव किए हैं। आज कहर्पोरेट हाउसेस मीटिंग के लिए वीडियो कांफ्रेंसिंग एवं पत्र व्यवहार के लिए ई-मेल का प्रयोग कर रहे हैं। देश की मुख्य धरोहर मानी जाने वाली कृषि के विकास के लिए सरकार द्वारा सोशल मीडिया का प्रयोग किया जा रहा है। इस क्रम में सरकार द्वारा कई अहनलाइन पोर्टल शुरू किए गए हैं, जिनके द्वारा कृषि से संबन्धित विभिन्न जानकारियों को साझा किया जा रहा है। साथ ही साथ अनाज के अपडेट बाजार भावों को किसान को मुहैया करने के लिए मोबाइल एप भी विकसित किया गया है। जो सोशल मीडिया के समाज के विकास में सकारात्मक भमिूका को उजागर करते हैं।[३]

प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं। ऐसे ही सोशल मीडिया के बहुत से सकारात्मक प्रभाव हैं तो नकारात्मक प्रभाव भी नजर में आ रहे हैं। सोशल मीडिया में आतंकवाद एक बड़ी समस्या है। एक रिपोर्ट के मुताबिक आईएस आतंकी संगठन सोशल मीडिया के जरिए दुनिया भर से ३० हजार लड़ाकों की भर्ती कर चुका है। इसके अलावा अश्लील सामग्री भी सोशल मीडिया के लिए एक बड़ी चुनौती है। जो कि एक बड़े बिजनेस में तब्दील हो रहा है। भारत में वयस्क फिल्म देखने की उम्र सीमा १८ वर्ष है, लेकिन सोशल मीडिया के माध्यम से किशोर एवं बच्चे भी वयस्क फिल्में आसानी से देख रहे हैं। सोशल मीडिया के जरिए अफवाहों का फैलाना आम सा हो गया है। असम की हिंसा हो या मुजफ्फरनगर दंगे, अफवाहें सोशल मीडिया के जरिए ही फैली। इस तरह के कई उदाहरण हैं जो सोशल मीडिया के समाज पर नकारात्मक उदाहरण को प्रस्तुत करते हैं। स्पष्ट है कि सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसने आम नागरिक को अपने विचार व्यक्त करने का आसान मंच प्रदान किया है। सोशल मीडिया की इस आजादी ने जहां एक तरफ जन चेतना जाग्रत की है वहीं कुछ समाज विरोधी ताकतों ने इसका गलत इस्तेमाल भी किया है। सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलुओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है तो इसके जरिए बढ़ रहे साइबर क्राइम से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।[४]

आज हमें जरूरत है सोशल मीडिया के प्रयोग के तरीकों के प्रति जागरूकता फैलाने की, जिससे आंदोलनों को स्वर देने वाले मंच, आतंकवाद, अश्लीलता एवं धोखा-धड़ी जैसे तमाम नकारात्मक पहलुओं को नियंत्रित किया जा सके। वर्तमान समय में सोशल मीडिया के रूप में आम आदमी को ऐसा तकनीक मिल गया है जिसके जरिये वह अपनी बात एक बड़ी

आबादी तक सुगमतापूर्वक पहुंचा सकता है। इसे सोशल मीडिया की लोकप्रियता ही कहा जाए कि आज आम आदमी से लेकर खास आदमी भी इससे जुड़ा हुआ है। गौरतलब है कि सोशल मीडिया के ये प्लेटफार्म न सिर्फ व्यक्तिगत जानकारियों के लिए ही प्रयोग में लाए जाते हैं बल्कि राजनीतिक और सामाजिक मामलों में भी इनका प्रयोग हो रहा है। सशक्त लोकपाल बिल की मांग कई दशकों से चली आ रही थी, लेकिन अन्ना हजारे के नेतृत्व में जिस तरह से भारत में इसकी मांग ने जोर पकड़ी और उसमें लोगों का जनसमर्थन मिला, वह केवल सोशल मिडिया के माध्यम से ही संभव हुआ। इस प्रकार वर्तमान में कई तरह के आंदोलनों को आगे बढ़ाने में सोशल मीडिया ने अपनी महत्ती भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया का देश एवं समाज के हर पहलू पर प्रभाव पड़ रहा है। चाहे शिक्षा हो, व्यावसाय हो, राजनीति हो, बच्चे हों, युवा हो या फिर महिलाएँ हो कोई भी इसके प्रभाव से वंचित नहीं है। आज सोशल मीडिया ने सामाजिक जीवनशैली को बदलकर रख दिया है। हमारी जरूरतें, हमारी कार्य प्रणालियां, हमारी रुचियां-अभिरुचियां और यहां तक कि हमारे सामाजिक मेल-मिलाप, वैवाहिक संबंधों का सूत्रधार भी किसी हद तक सोशल मीडिया ही है। सोशल नेटवर्किंग या सामाजिक संबंधों के ताने-बाने को रचने में इसकी भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। इसके जरिये हम घर बैठे दुनिया भर के अनजान और अपरिचित लोगों से सामाजिक, राजनीतिक एवं आंतरिक संबंध बना रहे हैं। ऐसे लोगों से हमारी गहरी छन रही है, अंतरंग संवाद हो रहे हैं, जिनसे हमारी वास्तविक जीवन में कभी मुलाकात ही नहीं हुई है। सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं की जिंदगी का एक अहम अंग बन गया है। अगर सही मायने में देखा जाए तो आज का दौर युवाशक्ति का दौर है। इसके माध्यम से वे अपनी बात सशक्त तरीके से देश और दुनिया के हर कोने तक पहुंचा सकते हैं। कहा जाता है कि भारत युवाओं का देश है। भारत में इस समय ६५ प्रतिशत के करीब युवा हैं जो किसी और देश में नहीं हैं और इन युवाओं को जोड़ने का काम सोशल मीडिया कर रहा है। युवाओं में सोशल नेटवर्किंग साइट का क्रेज दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण आज सोशल नेटवर्किंग दुनिया भर में इंटरनेट पर होने वाली नंबर वन गतिविधि बन गया है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन अह्फ इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत के शहरी इलाकों में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का किसी न किसी रूप में प्रयोग करते हैं। अब तो भारत के गांवों में भी सोशल मीडिया का क्रेज काफी बढ़ गया है। सोशल मीडिया पर आज प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र पत्रकार हो गया है। वह अपने आस-पास घटित घटनाओं पर अपने स्वतंत्र विचार रखने के लिए इस मंच का भरपूर उपयोग कर रहा है। हम पर सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत ही गहरा हुआ है। अब हम ज्यादा सोचने-समझने और सपने देखने लगे हैं और उन सपनों को सोशल मीडिया के जरिए पूरा करने का प्रयास करते हैं। सोशल मीडिया जहां एक तरफ हमारे सपनों को एक नयी दिशा दे रहा है वही दूसरी ओर उन्हें साकार करने के लिए माध्यम भी उपलब्ध करा रहा है। ज्ञातव्य है कि बच्चों एवं किशोर वर्ग को सोशल मीडिया का उपयोग बहुत ही सावधानी से करने हेतु सलाह देनी चाहिए।

संदर्भ :

१. कुमार, अरूण, विश्व मिडिया बाजार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, २०१६

२. गुप्ता, ओम, मिडिया और समाज, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१३

३. जोशी, आर.एस. मिडिया और बाजार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१२

४. सिंह, रामकविन्द्र, संचार माध्यम और सांस्कृतिक वर्चस्व, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१२